बी॰ए॰ भाग-2
प्रधान - हिन्दी

रमेश कुमार यादव
हिन्दी - विभाग
डी. के. कालेज डुमरॉव
बक्सर (बिहार)

सिन्दूर की होली के आधार पर चन्द्रकला का चरित्र-चित्रण

चन्द्रकला डिप्टी कलक्टर मुरारीलाल की इकलौती बेटी है। वह सुशिक्षित है, बी. ए. पास है। पिता ने मनोज से इसके विवाह का निश्चय किया लेकिन रजनीकांत के दर्शन से इसकी दुनिया ही बदल जाती है। वह उसकी मृत्यु के पश्चात उसकी विधवा के रूप में ही जीवन बिता देना चाहती है। मनोरमा उसके इस वैधत्व को स्वीकार नहीं कर पाती।

चन्द्रकला भी जानती है कि जब प्रथम दर्शन में प्रेम का युग नहीं रहा लेकिन वह इसे हृदय से हारी हुई बाजी कहती है। चन्द्रकला ने जिस एक से प्रेम किया वह आज नहीं रहा तो उसकी स्थिति भी विधवा जैसी ही हो जाती है। इस प्रकार प्रेम का प्राचीनतम रूप एवं आदर्श यहाँ नये लेवल के साथ प्रस्तुत किया है। मनोरमा उसे समझाने का प्रयत्न करती है परन्तु चन्द्रकला अपने निश्चय पर अटल रहती है।

चन्द्रकला यह भी दावा करती है कि मनोरमा का वैधत्व निरर्थक है उसका अपना सार्थक। मनोरमा उस पुरुष की विधवा है जिसे उसने कभी देखा नहीं, जिसकी कोई स्मृति उसकी आत्मा को हिला नहीं

पाती अर्थात् उसका वैधव्य रूढ़ियों का है। लेकिन चन्द्रकला को पूर्णरूपेण विदित है कि वह रजनीकांत की निर्विकार मुस्कान, यौवन और पौरुष की विधवा है।

चन्द्रकला नारी को उस दशा से भी विद्रोह करती है, जिसमें रोटी और कपड़े के कारण नारी, पुरुषों की गुलामी करने के लिए विवश हो जाती है। और पराधिनता की यह परम्परा उसकी नस-नस में इस तरह व्याप्त हो जाती है कि वह पुरुष की सेज को ही अपने जीवन का चरम लक्ष्य समझ बैठती है।

चन्द्रकला सामाजिक मर्यादाओं की अवहेलना कर स्वच्छन्द प्रेम पद्धति को प्रश्रय देती है। वह दलित भारतीय नारी के प्रति विद्रोह करने वाली बुद्धिवादी नारी है, जो प्रत्येक वस्तु को बुद्धि के काँटे पर तौल कर अपनाना चाहती है किन्तु एक स्थिति ऐसा भी आती है जब वह स्वयं वैधत्व स्वीकार करती है, उसे वह चिरतन नारीत्व का अंश मानती है जबकि उसका यह सब एक ओढ़ा हुआ बौद्धिक संवाद ही प्रतीत होता है, पूर्ण यथार्थ नहीं।

इस तरह कहा जा सकता है कि वह भी भारतीय प्रथाओं को स्वीकार कर स्वयं को एक आदर्श रूप में प्रस्तुत

करती है। इस अस्वाभाविक चरित्र को स्वाभाविक बनाने के लिए नाटककार ने यद्यपि उसकी पृष्ठ भूमि में अनेक मनोवैज्ञानिक कारणों और एक विशिष्ट वातावरण की सृष्टि की है परन्तु वह पात्र के अपने सिद्धान्त परिवर्तन पर आवरण डालने में समर्थ नहीं हो सका है।

रमेश कुमार यादव
असिस्टेंट - प्रोफेसर
हिन्दी - विभाग
डी. के. कालेज डुमराँव
बक्सर - (बिहार)